09 July
Tuesday WK 28
Day 190-175
2019

M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

JULY '19

Appointments

अध्यापक-शिक्षा की संरचना -
Structure of Teacher-Education

(I). प्रथम अवस्था - अध्यापक शिक्षा की प्राथमिक अवस्था के पहले ही माध्यमिक एवं महाविद्यालय की अवस्था आती है।

(II) द्वितीय अवस्था या एम० एड० -
उनके लिए अध्यापक शिक्षा जिन्होंने बी.एड. एवं एल०टी० प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है।

(III) तृतीय अवस्था या एम० फिल० -
जिन्होंने एम०एड की परीक्षा उत्तीर्ण की है उनकी अध्यापक - शिक्षा पी०एच०डी० की पूर्व अवस्था कहलाती है।

(IV) चतुर्थ अवस्था - एम० फिल० की परीक्षा पास कर लेने के बाद प्रत्येक छात्र से यह आशा की जाती है कि कुछ शैक्षिक समस्याओं का चुनाव करें और उनको थीसिस के रूप में प्रस्तुत करें।

Scanned with CamScanner

अध्यापक शिक्षा की अवस्था
Stages of Teacher Education

(I) पूर्व-प्राथमिक अवस्था (Pre-Primary Stages)

पूर्व प्राथमिक अवस्था पूर्व प्राथमिक अवस्था अध्यापक - शिक्षा की ओर अभी तक कोई उचित ध्यान नहीं दिया गया है। इसके लिए कुछ नाममात्र की प्रशिक्षण संस्थाएं इलाहाबाद, आगरा, लखनऊ एवं दिल्ली में है।

प्रत्येक तहसील स्तर पर एक पूर्व प्राथमिक अध्यापक शिक्षा का केंद्र होनी चाहिए प्रशिक्षार्थी की न्यूनतम योग्यता हाईस्कूल हो - एवम् प्रशिक्षण की अवधि एक वर्ष हो।

अध्यापक शिक्षण की संरचना निम्नलिखित है। —

(I) शिक्षण कौशल (Teaching Skills)

कविता का पाठ बताना, कहानी कहना, खेल, खेलना एवं कला तथा विशिष्ट शिक्षण विधियाँ।

(II) शिक्षण उद्देश्य (Teaching objectives)

बालक का सर्वांगीण विकास।

(III) शिक्षण की प्रकृति (Teaching culture)

व्यवहार का मैत्री

M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7
8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21
22 23 24 25 26 27 28
29 30 31
JULY 19
Appointments

② प्राथमिक अवस्था (Primary Stage)

ऐसे विद्यालय सामान्य विद्यालय कहलाते है जहां पर कि प्राथमिक अध्यापकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। इनका संचालन राज्य सरकार द्वारा होता है। अध्यापक प्रशिक्षार्थी की न्यूनतम योग्यता हाईस्कूल होती है। समय की अवधि दो वर्ष की होती है। प्रशिक्षार्थी को B.T.C की उपाधि दी जाती है। प्रवेश पाने की न्यूनतम योग्यता स्नातक होती है। इसकी अवधि एक वर्ष की होती है तथा उसकी संरचना निम्न प्रकार होती है।

(i) शिक्षण कौशल - शारीरिक शिक्षा, मनोरंजक कार्यकलाप, स्वास्थ्य शिक्षा, कला, संगीत, खेल, एवं विशिष्ट शिक्षण विधियां हैं।

(ii) शिक्षण उद्देश्य Teaching objectives — भाषा (मातृ भाषा और अंग्रेजी) प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान और गणित, बच्चे का मानसिक विकास।

(iii) शिक्षण की ज्ञाति - आधुनिक व्यवहार का ज्ञान, विद्यालय के महत्वपूर्ण स्थान का ज्ञान, सामाजिक परिवर्तन के विषय का ज्ञान,

③ जूनियर अवस्था → Junior or Middle Stage.

इस प्रशिक्षण को सी०टी० टी०टी० (बेसिक) अथवा जे०टी०सी०, जे०बी०टी०सी० अथवा B.T.C. के नाम से जाना जाता है। प्रशिक्षार्थी प्रवेश की अनुमति इंटर मीडिएट होती है। प्रशिक्षण की अवधि दो वर्ष की होती है। यह प्रशिक्षण अध्यापक शिक्षा के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं करता।

Scanned with CamScanner

(4) माध्यमिक अवस्था (Secondary of Higher Secondary Stage)

इस अवस्था में न्यूनतम योग्यता स्नातक होती है। इस प्रशिक्षण की अवधि एक वर्ष होती है। सामान्यतः इस प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम को दो भागों में बाँटते हैं।- (i) सैद्धान्तिक (ii) प्रयोगात्मक
इसके पश्चात् द्वारा एल.टी., एल.टी. (Basic), B.Ed. की उपाधि दी जाती है।

क्षेत्रीय महाविद्यालय में चार वर्ष का सामूहिक प्रशिक्षण देकर B.Sc., B.Ed., B.A. उपाधि प्रदान करता है। इसमें प्रवेश इंटर के बाद होता है। प्रशिक्षार्थी की न्यूनतम योग्यता स्नातक होती है। ऐसे अभ्यर्थी को वरीयता दी जाती है, जिसने B.A. में शिक्षा आरम्भ किया हो या अध्यापक हो। इस उपाधि को बी०एड० के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस प्रशिक्षण की अवधि एक वर्ष होती है। एवं शिक्षा की संरचना निम्नलिखित प्रकार की होती है।

(1) शिक्षण कौशल (Teaching Skills)-
(a) प्रशिक्षण की विधि, एक विषय में विशिष्ट करना (b) सूक्ष्म शिक्षण (c) स्वास्थ्य का ज्ञान शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजक क्रियाएँ एवं कार्य अनुभव (d) मानव व्यवहार का ज्ञान शिक्षण तकनीकी (भारतीय

(2) शिक्षण उद्देश्य - एवं

5 महाविद्यालयी स्तर : Collegiate Level

महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिए वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा आकर्षित नहीं करती। ऐसे अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जो कि योग्य हों एवं अपने व्यवसाय में निपुण होना चाहिए।

(क) एम० एड० पाठ्यक्रम (M.Ed. Course)

वर्तमान समय में एम० एड० के सैद्धान्तिक को बन्द कर देना चाहिए इसके कुछ प्रश्न-पत्र जैसे शैक्षिक अनुसंधान एवं शोध प्रपत्र को एम० फिल की कक्षा में लागू करनी चाहिए।

(ख) एम० फिल पाठ्यक्रम – (M.Phil Course)

एम०एड० एवं बी० फिल० की परीक्षा पास कर चुके अभ्यर्थी को इस पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। इसकी संरचना निम्न लिखित है।

(1) शिक्षण कौशल (Teaching Skills)

विशिष्ट कौशल एवं मुख्य कौशल से सम्बंधित महत्वपूर्ण ज्ञान, व्यवहार, सुधार, समस्याओं की पहचानने की क्षमता एवं पहचान।

July 14 Sunday 2019 WK 28 Day 195-170

(I) शिक्षण उद्देश्य (Teaching objectives)

(i) अध्यापक शिक्षा (ii) शैक्षिक अनुसंधान एवं मंत्र (iii) शैक्षिक संरचना एवं शैक्षिक प्रशासन (iv) पाठ्यक्रम की व्यवस्था करना (v) शिक्षा के क्षेत्र में मंत्रों का विशिष्टीकरण

(III) शिक्षण की प्रकृति (Nature of teaching)

"सृजनात्मकता का विकास, सामाजिक ज्ञान, नेतृत्व के गुणों का विकास, मनोवृत्ति का विकास, शिक्षण के महत्व एवं कार्य को समझना।"

इसके पाठ्यक्रम की प्रभावोत्पादकता के लिए सुझाव

(i) एम० फिल० के पाठ्यक्रम के लिए एक सप्ताह में कुछ घण्टों का निर्धारण करना चाहिए।

(ii) एम० फिल० के पाठ्यक्रमों का चयन इस प्रकार किया जाए कि उनका समावेश अच्छी-अच्छी पुस्तकों में हो सके।

(iii) एम० फिल० पाठ्यक्रम परीक्षा पर आधारित न हो, इसके मूल्यांकन में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षकों में शिक्षण एवं अनुसंधान की योग्यता का विकास हो।